आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 2/जून 2022
Received:14/06/2022; Published:24/06/2022

कविताएं

ग़ज़ल

- डॉ. बिरेन्द्र प्रताप सिंह
मुंबई

दबे हुये हैं भाव कुरेदकर उन्हें जगा लूं रुको प्रिये,
सांसों के सरगम पर कोई गीत सजा लूं रुको प्रिये।

शहर शहर में आग लगी है इंसानों में नफरत है,
आंगन के शोलों से कोई मीत बना लूं रुको प्रिये ।

सबने प्यार मुहब्बत के सपने देख थे कई कई,
अमन चमन में आग लगी है उन्हें बुझा लूं रुको प्रिये।

तन मन दोनों घायल है दिल प्रीत का कायल है,
आग के दरिया से होकर कोई राह निकालू रुको प्रिये।

सांस सांस पर पहरा है आखर जबान पर ठहरा है,
दिल में जो जो भेद छुपे हैं उन्हें दिखा दूं रुको प्रिये।

****